विश्व हिन्दी सम्मेलनों की प्रासंगिकता (विशेष सन्दर्भ–नौवां विश्व हिन्दी सम्मेलन)

डॉ0 वीरेन्द्र सिंह यादव,

विभागाध्यक्ष–हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग

डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,

लखनऊ,उ.प्र

विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र की राजभाषा होने के कारण हिन्दी के प्रति अनेक देशों में खासकर वैश्वीकरण के दौर के परिप्रेक्ष्य में ललक बढ़ी है। विकसित राष्ट्रों के लिए भारत पहले की अपेक्षा लाभप्रद साबित हुआ है। अतः इसके लिए हिन्दी का सहारा भी विश्व की द्वितीय सबसे बड़ी आबादी वाला बाजार और उपनिवेश वादियों का स्परूप भी तो अब साम्राज्यवादी न रहकर बाजार के माध्यम से पैठ बनाना हो गया है, इसलिए भी हिन्दी को अपनाना पड़ रहा है।[1]

प्रयोग की दृष्टि से हिन्दी भाषा का क्षेत्र तीन प्रकार का होता है। एक तो हिन्दी–भाषी क्षेत्र है जो दिल्ली, उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, पंजाब का कुछ भाग तथा हिमाचल प्रदेश में है। दूसरा क्षेत्र भारत के अन्य भाषा–भाषी प्रदेशों में है, जिनमें मुख्य आन्ध्रप्रदेश तथा कर्नाटक के दक्षिणी हिन्दी क्षेत्र, महाराष्ट्र तथा गुजरात के बम्बई तथा अहमदाबाद आदि में बिखरे हुए क्षेत्र, जहाँ मोटे रूप से बंबइया हिन्दी बोली जाती है, पश्चिमी बंगाल के कलकत्ता शहर के बिखरे हुए क्षेत्र, जहाँ कलकतिया हिन्दी बोली जाती है। इनके अतिरिक्त शिलांग आदि अन्य कई नगरों में भी एक प्रकार की बाजारू हिन्दी बोली जाती है। तीसरा क्षेत्र भारत के बाहर है जिसमें मुख्यतः मारीशस, मलेशिया, फीजी, सूरीनाम,त्रिनिदाद तथा दक्षिणी अफ्रीका आदि हैं। गौणतः नेपाल, जमाइका, वर्मा, मलेशिया, सिंगापुर, कीनिया, इंडोनेशिया, थाईलैण्ड, श्रीलंका, ब्रिटेन, अमेरिका तथा कनाडा आदि।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी का स्वरूप क्या है, इस सम्बन्ध में तरह–तरह के मत हैं, हो सकते हैं। इस प्रसंग में गहराई से विचार करने पर एक बात जो हमारे सामने उभरकर आती है, वह यह कि किसी भी भाषा के सभी रूप कभी एक समान नहीं होते, और न हो सकते हैं।[2] लेकिन हिन्दी भाषा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर माँग विचाराभिव्यक्ति का साधन नहीं है बल्कि वह राजनीतिक और सांस्कृतिक उद्देश्यों की प्राप्ति का भी एक समर्थ साधन सिद्ध हो चुकी है।

दुनिया के अनेका देशों में वहाँ के सामाजिक अस्मिता, ऐतिहासिक पहचान और सांस्कृतिक कड़ी के रूप में हिन्दी को अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के रूप देने के सम्बन्ध में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति[3], वर्धा के अध्यक्ष श्री मधुकर राव चौधरी ने बैठक में एक विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि–समिति देश–विदेश में राष्ट्रभाषा के प्रचार–प्रसार का कार्य कर रही है। इसे और आगे बढ़ाने का अनुकूल वातावरण है। हिन्दी को राष्ट्रीय स्तर से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ले जाने के लिए समिति को प्रयास करना चाहिए और कार्यक्षेत्र बढ़ाना चाहिए। इस कार्य के लिए विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन होना चाहिए। मधुकर राव के प्रस्तुत विचार सभी को पसन्द आये, और इस तरह विश्व हिन्दी सम्मेलनों की प्रक्रिया का शुभारंभ हुआ।

हिन्दी के लिए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर समस्त कार्यों का मूल्यांकन करने और भविष्य के कार्य की दिशा निर्धारित करने के उद्देश्य से देश–विदेश के समस्त हिन्दी सेवियों, विद्वानों और लेखकों के सामूहिक चिन्तन तथा विचार विमर्श की आवश्यकता अनुरूप की जाती थी। अतः यह निर्णय लिया गया कि विश्व के हिन्दी विद्वानों, हिन्दी सेवियों एवं हिन्दी प्रेमियों को एक मंच पर एकत्र किया जाये, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी की उपलब्धियों एवं सम्भावनाओं पर विचार–विमर्श हो सके। यह भी विचार किया गया कि इ समंच के द्वारा संयुक्त राष्ट्रसंघ एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों में हिन्दी को आधिकारिक भाषा के रूप में स्थान दिलाया जाए तथा अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में हिन्दी को स्थापित किया जाये। इसी लक्ष्य को ध्यान में रखकर सन् 1973 ई0 में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा ने विश्व हिन्दी सम्मेलन आयोजित करने का मूल विचार देश के समक्ष रखा। भारत के प्रमुख नेताओं से विचार–विमर्श के बाद और आचार्य विनोवा भावे जी की सहर्ष स्वीकृति तथा माननीय प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी जी के सहयोग एवं आवश्वासन मिलने के बाद प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन भारत के केन्द्रीय शहर नागपुर (महाराष्ट्र) में आयोजित करने का निर्णय लिया।

नौवां विश्व हिन्दी सम्मेलन सन् 2012 के 22 से 24 सितम्बर के बीच दक्षिण अफ्रिका के शहर जोहांसवर्ग में सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन स्थल का नाम गांधीग्राम रखा गया। विभिन्न सत्र नेलसन मंडेला सभागार सहित अन्य सभागारों में संचालित किये गये। इन सत्रों के नाम शांति, सत्य, अहिंसा, नीति और न्याय रखे गये। इस सम्मेलन का आयोजन विदेश मंत्रालय भारत सरकार द्वारा किया गया। दक्षिण अफ्रीका का हिन्दी संघ इसका सहयोगी संगठन था। नौवें विश्व हिन्दी सम्मेलन के मुख्य विषय–भाषा की अस्मिता और हिन्दी का वैश्विक सन्दर्भ था। इस सम्मेलन के मुख्य अतिथि दक्षिण अफ्रीका के वित्तमंत्री श्री प्रवीण गोवर्धन थे। तथा विशेष अतिथि मॉरीशस के कला एवं संस्कृति मंत्री श्री मुकेश्वर चुन्नी थे। इस सम्मेलन में बाईस देशों के छः सौ से अधिक प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। इस सम्मेलन में लगभग तीन सौ भारतीय सम्मिलित हुये। सम्मेलन में तीन दिन चले मंथन के बाद कुल बारह प्रस्ताव पारित किये गये और विरोध के बाद एक संशोधन भी किया गया। प्रमुख सूत्रों में हिन्दी के प्रमुख उपविषय इस प्रकार हैं– महात्मा गाँधी की भाषा दृष्टि और वर्तमान का सन्दर्भ, हिन्दी फिल्मः रंगमंच और मंच की भाषा, सूचना प्रौद्योगिकी : देवनागरी लिपि और हिन्दी सामर्थ्य, लोकतंत्र और मीडिया की भाषा के रूप में हिन्दी, हिन्दी के विकास में विदेशी प्रवासी लेखकों की भूमिका और हिन्दी के प्रसार में अनुवाद की भूमिका।

दक्षिण अफ्रीका में सम्मेलन का आयोजन न केवल दक्षिण अफ्रीका के साथ बल्कि इस पूरे क्षेत्र के साथ–साथ एवं भारतीयों के ऐतिहासिक, सुदृढ़ एवं बढ़ते हुये सम्बन्धों को परिलक्षित करता है। इस सम्मेलन की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि यह हिन्दी प्रेमियों के वैश्विक समुदाय की इस देश के साथ महात्मा गांधी के सम्बन्धों के प्रति भावभीनी श्रद्धांजलि दी गयी।[3]

नौवें विश्व हिन्दी सम्मेलन ने दक्षिण अफ्रीका के महान नेता डॉ0 नेल्सन मण्डेला के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया जिन्होंने महात्मा द्वारा प्रतिपादित शांति, अहिंसा एवं न्याय के शाश्वत सिद्धांतों को आत्मसात करके केवल अपने देश के लिये ही नहीं बल्कि विश्वमानव के मानव के कल्याण के लिये एक सम्मानित जीवन का मार्ग प्रशस्त किया। यह सम्मेलन डॉ0 मंडेला को ससम्मान शुभकामनाएँ ज्ञापित करता है।

कुल तीन दिवसीय अर्थात 22 से 24 सितम्बर, 2012 को दक्षिण अफ्रीका में आयोजित 9वें विश्व हिन्दी सम्मेलन में, जिसमें विश्वभर के हिन्दी विद्वानों, साहित्यकारों और हिन्दी प्रेमियों

आदि ने भाग लिया, इन सबने सर्वसम्मति से निर्णय लिया कि:–

1. हिन्दी के बढ़ते हुये वैश्वीककरण के मूल में गाँधी जी की भाषा दृष्टि का महत्वपूर्ण स्थान है।
2. वर्धा स्थित महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय भी हिन्दी सम्मेलनों में पारित संकल्पों का ही परिणाम है। यह विश्वविद्यालय हिन्दी के प्रचार–प्रसार और उपयुक्त आधुनिक शिक्षण उपकरण विकसित करने में सराहनीय कार्य कर रहा है।
3. मॉरीशस के विश्व हिन्दी सम्मेलन केन्द्रीय संस्थान की संकल्पना प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन के दौरान की गयी थी। यह सम्मेलन इस सचिवालय की स्थापना के लिये भारत और मॉरीशस की सरकारों द्वारा किये गये अथक प्रयासों के समर्थन की सराहना करता है।
4. नौवां विश्व हिन्दी सम्मेलन केन्द्रीय हिन्दी संस्थान की भी सराहना करता है कि वह उपर्युक्त पाठ्यक्रम और कक्षाओं का संचालन करके विदेशियों और देश के गैर हिन्दी भाषी क्षेत्र के बीच हिन्दी का प्रचार–प्रसार कर रहा है।
5. सम्मेलन इलेक्ट्रॉनिक तथा प्रिन्ट मीडिया विशेषकर हिन्दी मीडिया, फिल्मों और थियेटर द्वारा किये जा रहे कार्य की भी प्रशंसा करता है जो हिन्दी के माध्यम से घर–घर तक ज्ञान पहुँचा रहे हैं।
6. नौवां विश्व हिन्दी सम्मेलन दक्षिण अफ्रीका में हिन्दी शिक्षा संघ तथा अन्य संस्थाओं द्वारा हिन्दी शिक्षण एवं हिन्दी के प्रसार के लिये किये जा रहे कार्य की प्रशंसा करता है और हिन्दी को समर्थन प्रदान करने के लिये उनके प्रति आभार व्यक्त करता है।
7. इस सम्मेलन में यह भी प्रस्ताव पारित किया गया कि हिन्दी में युवा वर्ग की रूचि निरन्तर बढ़ रही है जो सूचना प्रौद्योगिकी सम्बन्धी उपकरण विकसित किये जाने के साथ–साथ हिन्दी फिल्मों, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया तथा सोशल मीडिया की भूमिका का ही एक भाग है और हिन्दी भाषा को व्यापार, वाणिज्य और बाजार से जोड़ने का परिणाम है।
8. विदेशी नागरिक हिन्दी भाषा, साहित्य और भारतीय संस्कृति में अपनी रूचि के अलावा व्यावसायिक कारणों से भी हिन्दी सीख रहे हैं। जो वैश्विक सन्दर्भ में हिन्दी को प्रासंगिकता और इसके महत्व को प्रतिपादित करते हैं।
9. हिन्दी के विकास में विदेश में रह रहे प्रवासी लेखकों की महत्वपूर्ण भूमिका सराहनीय है।
10. यह विश्व हिन्दी सम्मेलन हिन्दी भाषा, साहित्य,सूचना प्रौद्योगिकी एवं विशेष तौर पर महात्मा गांधी के जीवन एवं साहित्य पर लगायी गयी समेकित प्रदर्शनी सम्मेलन का एक महत्वपूर्ण आकर्षण का केन्द्र रही है और इसमें सभी प्रतिभागियों ने गहरी रूचि दिखायी है। सम्मेलन प्रदर्शनी के आयोजकों के प्रयासों की सराहना करता है।
11. इस सम्मेलन में स्मारिका गंगनांचल पत्रिका के विशेषांक प्रकाशित किये गये। इनके सुचारू रूप से किये गये प्रकाशन के लिए सम्मेलन इनके सम्पादक मण्डलों और लेखकों की सराहना करता है।
12. इस सम्मेलन के अवसर पर भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद तथा दक्षिण

अफ्रीका के स्थानीय कलाकारों द्वारा की गयी सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने भी सभी उपस्थिति प्रतिभागियों को प्रभावित किया। सम्मेलन इन कार्यक्रमों के आयोजकों की सराहना करता है।

13. सम्मेलन की दैनिक गतिविधियों पर प्रतिदिन एक समाचार पत्रिका निकाली गयी। इसके लिए महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय द्वारा किये गये प्रयत्न एवं परिश्रम की सम्मेलन सराहना करता है।

14. इस नौवें विश्व हिन्दी सम्मेलन में दक्षिण अफ्रीका की सरकार द्वारा दिये गये समर्थन सहयोग, सहायता एवं भागीदारी के लिए सम्मेलन ने दक्षिण अफ्रीका की सरकार के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया जिसके कारण इस सम्मेलन का आयोजन सुचारू रूप से सम्पन्न हो सका।

9 वें विश्व हिन्दी सम्मेलन के उपर्युक्त बिन्दुओं पर हुयी कार्यवाही के आलोक में सम्मेलन चाहता है किः–

- मॉरीशस में स्थापित विश्व हिन्दी सचिवालय विभिन्न देशों के हिन्दी शिक्षण से सम्बद्ध विश्वविद्यालयों, पाठशालाओं एवं शैक्षणिक संस्थानों से सम्बन्धित एक डाटाबेस का बहुत स्रोत केन्द्र स्थापित करे।

- विश्व हिन्दी सचिवालय विश्वभर के हिन्दी विद्वानों, लेखकों तथा हिन्दी के प्रचार–प्रसार से सम्बद्ध लोगों का भी एक डेटाबेस तैयार करे।

- हिन्दी भाषा की सूचना प्रौद्योगिकी के साथ अनुरूपता को देखते हुये सूचना एवं प्रौद्योगिकी संस्थानों द्वारा हिन्दी भाषा सम्बन्धी उपकरण विकसित करने का महत्वपूर्ण कार्य जारी रखा जाये। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हर सम्भव सहायता प्रदान की जाये।

- विदेशों में हिन्दी शिक्षण के लिए एक मानक पाठ्यक्रम तैयार किये जाने के लिए महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा को अधिकृत किया जाता है।

- अफ्रीका में हिन्दी शिक्षण को प्रोत्साहित करने के लिए और बदलते हुये वैश्विक परिवेश, युवा वर्ग की रूचि एवं आकांक्षाओं को देखते हुये उपर्युक्त साहित्य एवं पुस्तकें तैयार की जायें।

- सूचना प्रौद्योगिकी में देवनागरी लिपि के प्रयोग पर पर्याप्त सॉफ्टवेयर तैयार किये जायें ताकि विश्वभर के हिन्दी भाषियों और प्रेमियों को यह लाभ मिल सके।

- अनुवाद की महत्ता को देखते हुये अनुवाद के विभिन्न आयामों के सन्दर्भ में अनुसंधान की आवश्यकता है, अतः इस दिशा में ठोस कार्यवाही की जाये।

- विश्व हिन्दी सम्मेलनों के बीच अंतराल में विभिन्न देशों में विशिष्ट विषयों पर क्षेत्रीय सम्मेलन आयोजित किये जाते हैं। इनका उद्देश्य उनके अपने–अपने क्षेत्रों में हिन्दी शिक्षण और हिन्दी के प्रसार में आने वाली कठिनाइयों का समाधान खोजना है। सम्मेलन ने इसकी सराहना करते हुए इस बात पर बल दिया कि इस कार्य को प्रोत्साहित किया जाना चाहिये।

- विश्व हिन्दी सम्मेलनों में भारतीय और विदेशी विद्वानों को सम्मानित करने की परम्परा रही है। इस विशिष्ट सम्मान के अनुरूप ही इन सम्मेलनों में विद्वानों को

भेंट किये जाने वाले पुरस्कार अथवा सम्मान को गरिमापूर्व नाम देते हुए इसे विश्व हिन्दी सम्मान कहा जाये।

- विगत में आयोजित विश्व हिन्दी सम्मेलनों में पारित प्रस्ताव को रेंखाकित करते हुये हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र संघ में अधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता प्रदान किये जाने के लिए समयबद्ध कार्यवाही सुनिश्चित की जाये।
- दो विश्व हिन्दी सम्मेलनों के आयोजन के बीच यथा सम्भव अधिकतम तीन वर्ष का अंतराल रहे। दसवां विश्व हिन्दी सम्मेलन भारत में आयोजित किया जाये।[4]

स्पष्ट है कि राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में हिन्दी की विशेषताओं, उपलब्धियों तथा सम्भावनाओं को दृष्टिगत रखते हुए इस पर गहन विचार–विमर्श तथा भारतीय संस्कृति की वसुधैव कुटुम्बकम की अवधारणा का आत्मसात करने हेतु विज्ञान अध्यात्म के समन्वय हेतु एक विश्वपरिवार की भावना को विकसित करने हेतु विश्वहिन्दी सम्मेलनों का आयोजन किया गया।

सन्दर्भ

- गाँधी और राष्ट्रभाषा हिन्दी–डॉ0 सुनीता चौरसिया–कल्पना प्रकाशन–बी 1770, जहांगीरपुरी (नजदीक स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया) दिल्ली–110033,प्र.सं.–2014,पृ0 253
- हिन्दी भाषा का अन्तर्राष्ट्रीय सन्दर्भ–डॉ0 भोलानाथ तिवारी ,पांडुलिपि प्रकाशन 77/1 ईस्ट आज़ाद नगर, दिल्ली 110051,प्र.स.1998,पृ0112
- http://vishwahindisammelan.gov.in/Hinth-word-hindi-conference-hi.htm
- http://hi.wikipedia.ord/wiki.